P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-4*(Part-2) December- 2018
E: ISSN NO.: 2349-980X Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika

मध्यकालीन राजस्थान के शिलालेखों का सामाजिक एवं सांस्कृतिक अध्ययन (बीकानेर के विशेष सन्दर्भ में, 1600–1700 ई.)

ओमप्रकाश भाटी
वरिष्ठ शोध अध्येता,
इतिहास विभाग,
(कला, शिक्षा एवं सामाजिक विज्ञान संकाय)
जय नारायण व्यास विश्वविद्यालय,
जोधपुर, राजस्थान, भारत

सारांश

मध्यकालीन राजस्थान में बीकानेर राज्य का महत्वपूर्ण स्थान था। यहाँ के शासकों ने अपने पूर्वजों के गौरवशाली इतिहास को बनाये रखने और उसे समृद्ध करने में अपना भरपूर योगदान दिया हैं। इन शासकों ने अपने विभिन्न योगदानों को शिलालेखों पर उत्कीर्ण करवाया हैं। शिलालेख शब्द सम्राट अशोक द्वारा पत्थरों तथा चट्टानों पर छोड़े गए लिखित मानव आदर्शों के मिलने के पश्चात प्रचलित हुआ है। सम्राट अशोक के शिलालेख इतिहास की एक स्पष्ट छवि उकेरते हैं तथा एक अहम एतिहासिक दस्तावेज माने जाते हैं। ये शिलालेख लंबे समय तक लिखित रचना को सुरक्षित रखने हेतु महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं और इनसे हमें इतिहास के बारे में प्रमाणित व सटीक जानकारियों का ज्ञान प्राप्त होता है। शिलालेख ऐतिहासिक घटनाओं के वे प्रामाणिक साक्ष्य हैं, जिन पर सहजता से विश्वास किया जा सकता हैं। ये शिलालेख किले, महल, मन्दिर, कीर्तिस्तम्भ, बाग–बगीचे, छत्रियाँ, झरोखे, कुएं, तालाब, सरोवर, झालरे, बावडियाँ, स्तूपों, स्तम्भों, मठों, गुहाओं, खेतों के मध्य स्थित शिलाओं इत्यादि के रूप में उपलब्ध हैं। इन शिलालेखों से राजाज्ञा, जन्म–मृत्यु, विजय–पराजय, यज्ञ, राजवंश की उत्पत्ति, वंशवृक्ष, निर्माणकर्त्ता का नाम, निर्माण व जीर्णोद्धार कार्य, वीर पुरूषों का चरित्र, सती प्रथा, शासकों के मध्य संधि, विभिन्न संवत्, भूमिदान, ग्रामदान, दण्ड, जातियों–शाखाओं–गौत्र, रीति–रिवाजों, व्यापार–वाणिज्य, कर, मुद्रा सहित राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, सांस्कृतिक व अन्य जानकारियाँ प्राप्त होती हैं।

बीकानेर के शिलालेखों पर शोधपरक अध्ययन कार्य करने तथा इन शिलालेखों को नजदीक से देखने के लिए मैंने कई बार बीकानेर के पुरातात्विक स्थलों का भ्रमण किया और संबंधित काल के उपलब्ध शिलालेखों के कैमरा से छायाचित्र खींचकर, उनका अध्ययन किया। मैंने इस प्रस्तुत शोधपत्र में बीकानेर के सन् 1600 से 1700 ई. के मध्य कुल 88 शिलालेखों का संक्षिप्त वर्णन किया गया हैं।

मुख्य शब्द : शिलालेख, गोवर्द्धन लेख, रायसिंह प्रशस्तिलेख, प्रतिष्ठालेख, मूर्तिलेख, देवीकुण्ड सागर, छतरियाँ, सती स्मारक, मरूनायक (मूलनायक), भटनेर, जैन लेख।

प्रस्तावना

सांस्कृतिक दृष्टि से राजस्थान का इतिहास प्राचीनकाल से लेकर आधुनिक काल तक काफी वैभवशाली तथा गौरवशाली रहा हैं। इसका प्रमाण यहाँ के ऐतिहासिक एवं पुरातात्विक स्त्रोतों, जैसे– किले, महल, मन्दिर, कीर्तिस्तम्भ, बाग–बगीचे, छतरियाँ, झरोखे, कुएं, तालाब, सरोवर, झालरे, बावडियाँ, स्तूपों, स्तम्भों, मठों, गुहाओं, खेतों के मध्य स्थित शिलाओं इत्यादि के रूप में उपलब्ध हैं। इन ऐतिहासिक स्मारकों पर स्थित विभिन्न शिलालेखों से हमें तत्कालीन शासकों के वैभवशाली तथा गौरवशाली इतिहास की झलक प्राप्त होती हैं। इसी प्रकार मध्यकालीन राजस्थान में जैसलमेर राज्य का महत्वपूर्ण स्थान था। यहाँ के शासकों ने अपने पूर्वजों के गौरवशाली इतिहास को बनाये रखने और उसे समृद्ध करने में अपना भरपूर योगदान दिया हैं। इन शासकों ने अपने विभिन्न योगदानों को शिलालेखों पर उत्कीर्ण करवाया हैं। इन शिलालेखों से हमें राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक तथा सांस्कृतिक इतिहास की जानकारी प्राप्त होती हैं। शिलालेखों से बीकानेर के शिल्पियों, गजधरों (भवन निर्माण कार्य करने वाले ठेकेदार या मुख्य कारीगर) की सूचनाएं भी मिलती है। शिलालेखों में

उस समय के विभिन्न ओहदेदारों एवं हकीम, खजांची आदि का भी विवरण प्राप्त होता है। अतः शिलालेख भी बीकानेर के इतिहास के अध्ययन व लेखन की दृष्टि से काफी महत्वपूर्ण हैं।

शोध व अध्ययन का उद्देश्य

भारत के विभिन्न इतिहासकारों ने इतिहास के विभिन्न साहित्यिक स्त्रोतों (धार्मिक, लौकिक व विदेशी साहित्य) और पुरातात्विक स्त्रोतों (खण्डहरों, मुद्राओं, मोहरों, ताम्रपत्रों, उत्खनित सामग्री, कलाकृतियों) पर तो बहुत अधिक अध्ययन और लेखन कार्य किया हैं। परन्तु शिलालेखों पर उतना अधिक उत्साहजनक कार्य नहीं हुआ हैं, जितना की होना चाहिये था। राजस्थान में मुख्यतः शिलालेखों पर डॉ. दशरथ शर्मा, डॉ. गोपीनाथ शर्मा, गोविन्द श्रीमाली, मांगीलाल व्यास इत्यादि ने कार्य किया हैं। राजस्थान में यत्र तत्र शिलालेख बिखरे पड़े हैं, आवश्यकता है तो बस उनको सहजने और संरक्षित करने की। लेकिन यह हजारों लाखों शिलालेख देखरेख के अभाव में क्रमशः नष्ट होते जा रहे हैं। इनकी सुरक्षा की ओर किसी का ध्यान नहीं है। ये वर्षा, बाढ़ आदि प्राकृ–तिक कारणों से ही नहीं, बल्कि मानवीय अज्ञानता, लापरवाही और दुर्दशा से भी यह नष्ट हो रहे हैं। जो शिलालेख मंदिर, बावड़ी, तालाब, चौराहा आदि स्थानों पर लगे हुए हैं, उनकी नष्ट होने की गति तीव्र है। ऐसे भी शिलालेख देखे गए हैं, जो बावड़ी, तालाब, चौराहे पर लगे हुए हैं, उनको छोटे बच्चे खेल–खेल में नष्ट कर, पत्थर या अक्षरों को बिगाड़ कर उन्हें नष्ट कर रहे हैं। ऐसे भी शिलालेख हैं, जिनके मूल पाठ या उनके अंश भूतकाल में पत्र–पत्रिकाओं में छप गए हैं। किंतु अब वे शिलालेख भौतिक रूप में वहां अपने मूल स्थान पर उपलब्ध ही नहीं है। वे कहां चले गए? उन्हें कौन उठा ले गया? इसका किसी को पता नहीं। इस प्रकार के शिलालेख भी हैं जो कभी अमुक स्थान पर लगे हुए थे, किंतु उन्हें निर्माण कार्य के दौरान पत्थरों के रूप में दीवारों में चुनवा दिया गया है अथवा उन पर स्थानों की सफेदी के दौरान चुना पोत दिया गया है। दुख और पीड़ा इस बात की है कि आजादी के बाद जैसे अन्य विधाओं व विषयों का अध्ययन बढ़ा है, मूल्यांकन हुआ है, शोध–खोज हुई है, वैसा प्रयास इस और भी होना चाहिए था, जो नहीं हुआ है। कुछ व्यक्तिगत व संस्थागत प्रयास अवश्य हुए हैं, जैसे इंडियन एपीग्राफिक सोसायटी ने भी काम किया है। लेकिन वह आटे में नमक के बराबर है। विश्वविद्यालयों में यह काम होना चाहिए था, लेकिन नहीं हो रहा हैं। बीकानेर का विशाल मरुस्थलीय भूभाग शिलालेखों की दृष्टि से बहुत समृद्ध है। परंतु इस क्षेत्र के 1600 से 1700 ईस्वी के मध्य बहुत ही कम शिलालेखों पर कार्य हुआ हैं। इसी कारण मैंने इस विषय पर शोध व अध्ययन कार्य करने का निश्चय किया हैं।

साहित्यावलोकन

राजस्थान में शिलालेखों पर उतना अधिक उत्साहजनक कार्य नहीं हुआ हैं, जितना की होना चाहिये था। इस संबंध में जितना भी कार्य हुआ है, वह आटे में नमक के बराबर है। राजस्थान में मुख्यतः शिलालेखों पर डॉ. गोपीनाथ शर्मा ने ''राजस्थान के इतिहास के स्त्रोत'', देवीप्रसाद मुंशी ने ''मारवाड़ के प्राचीन लेख'', गोविन्द श्रीमाली ने ''राजस्थान के अभिलेख (मारवाड़ के विशेष सन्दर्भ में)'' (दो खण्डों में), दुर्गालाल माथुर ने ''राजस्थान के चौहान अभिलेख'', मांगीलाल व्यास ने ''मारवाड़ के अभिलेख'', सम्पादकों सुखवीर सिंह गहलोत–डॉ. सोहनकृष्ण पुरोहित–डॉ. नीलकमल शर्मा ने ''राजस्थान के प्रमुख अभिलेख'' तथा राजेन्द्र प्रसाद व्यास ने ''बीकानेर के शिलालेख एक ऐतिहासिक अध्ययन'' इत्यादि पुस्तकों का लेखन कार्य किया हैं। डॉ. दशरथ शर्मा ने भी शिलालेखों पर कार्य किया हैं। प्रो. एस. पी. व्यास ने अपनी पुस्तक ''राजस्थान के अभिलेखों का सांस्कृतिक अध्ययन'' में सन् 700 से 1200 ईस्वी के शिलालेखों का विवेचन किया हैं। पूरणचन्द नाहर ने ''जैन लेख संग्रह'' (तीन खण्डों में), मुनि जयन्त विजय ने ''अर्बुदाचल प्रदक्षिणा जैन लेख संग्रह'', अगरचन्द व भंवरलाल नाहटा ने ''बीकानेर जैन लेख संग्रह'' तथा रामवल्लभ सोमानी ने ''जैन इन्स्क्रिप्शन्स ऑफ राजस्थान'' नामक पुस्तकों में जैन मन्दिरों, उपासरों, दादाबाड़ियों में स्थित विभिन्न लेखों का विवेचन किया हैं। इन पुस्तकों में प्रकाशित शिलालेखों का समय प्राचीनकाल से लेकर 1970 ई. तक का हैं। इसके अलावा विभिन्न शोध–जर्नल्स में भी इस बारे में समय–समय पर कई शोधपत्र प्रकाशित हुए हैं। परन्तु इन पुस्तकों में ''मध्यकालीन राजस्थान के शिलालेखों का सामाजिक एवं सांस्कृतिक अध्ययन (बीकानेर के विशेषसन्दर्भ में, 1600–1700 ई.)'' पर बहुत ही कम कार्य हुआ हैं। शोधार्थी की जानकारी के अनुसार वर्ष 2001 से लेकर अब तक बीकानेर के शिलालेखों पर कोई नवीनतम शोधकार्य प्रकाशित नहीं हुआ हैं।

परिकल्पना

शिलालेख मौलिक व आधारभूत स्त्रोतों के रूप में हमारे भूतकाल को समझने के लिए उल्लेखनीय साक्ष्य हैं। इसलिए मध्यकालीन राजस्थान के 1600 से 1700 ईस्वी तक के बीकानेर के शिलालेखों पर शोधपरक अध्ययन कार्य करने तथा इन शिलालेखों को नजदीक से देखने के लिए मैंने कई बार बीकानेर के पुरातात्विक स्थलों का भ्रमण किया। इस दौरान बीकानेर के मेरे मित्र विजयशंकर जयपाल तथा उनकी धर्मपत्नी श्रीमती कुसुम ने भी मुझे बीकानेर के विभिन्न पुरास्थलों का भ्रमण करवाया। मित्र विजयशंकर के रिश्तेदार मदनगोपाल ने भी पुरास्थलों के भ्रमण में अपना सहयोग प्रदान किया। मैंने साथियों के साथ बीकानेर के राजस्थान राज्य अभिलेखागार बीकानेर, गंगा राजकीय संग्रहालय बीकानेर, जूनागढ़ दुर्ग, देवीकुण्ड सागर (राजपरिवार का शमशान स्थल), बीकानेर के विभिन्न मध्यकालीन मन्दिरों व विभिन्न समाजों की बगेचियों, संसोलाव व हर्षोलाव तालाब, विभिन्न गांवों जैसे–झज्झू, नाल, जांगलू, मोरखाणा आदि, राजकीय सार्वजनिक पुस्तकालय सहित अन्य पुरास्थलों का भ्रमण किया और संबंधित काल के उपलब्ध शिलालेखों के कैमरा से छायाचित्र खींचकर, उनका अध्ययन किया। इन शिलालेखों से संबंधित सहायक सामग्री विभिन्न ग्रन्थों, साहित्य, शोध–जर्नल्स इत्यादि से भी प्राप्त की गई। इसके अलावा बीकानेर के इतिहास पर पुस्तक लिखने वाले मोहनलाल गुप्ता, राजस्थान राज्य अभिलेखागार

बीकानेर के निदेशक डॉ. महेन्द्रसिंह खड़गावत, सुरेन्द्र राजपुरोहित, गंगा राजकीय संग्रहालय बीकानेर की परिरक्षक नीलिमा पूनिया, राजकीय दीनदयाल उपाध्याय सार्वजनिक मण्डल पुस्तकालय बीकानेर के पुस्तकालयाध्यक्ष विमल कुमार शर्मा, विभिन्न मन्दिरों के पुजारियों तथा स्थानीय लोगों आदि से भी व्यक्तिगत मुलाकात करके, उनसे भी बीकानेर के शिलालेखों व इतिहास के संबंध में महत्वपूर्ण जानकारियाँ प्राप्त की, जो इस शोधपरक अध्ययन में सहायक सिद्ध हुई हैं।

शोध प्रविधि

प्रस्तावित शोधपत्र के अध्ययन की प्रविधि मुख्यतः व्याख्यात्मक और विवेचनात्मक हैं। जिसमें विभिन्न शिलालेखों के अध्ययन के माध्यम से व्याख्या एवं विवेचन किया गया हैं। साथ ही विभिन्न साहित्यिक ग्रन्थों, अभिलेखागार, संग्रहालय, शोध जर्नल्स, पत्र–पत्रिकाओं, इतिहासकारों व स्थानीय लोगों से चर्चा, इन्टरनेट इत्यादि माध्यमों का भी प्रयोग किया गया हैं।

शिलालेख क्या हैं?

शिलालेख संस्कृत भाषा का शब्द हैं। शिला का अर्थ होता है पत्थर या चट्टान और जब लेख शब्द इसके साथ जुड़ जाता है तो शिलालेख बनता है। इस प्रकार शिलालेख का अर्थ है– ''शिला या पत्थर पर लिखा या खोदा हुआ कोई लेख।'' अर्थात् लंबे समय तक स्थायित्व प्रदान करने के लिए शिला या चट्टान पर लिखी गयी या खोदी गयी कोई आज्ञा, उपदेश या राजाज्ञा, ऐतिहासिक लेख, पुरालेख, प्रशस्तिलेख, प्रतिष्ठालेख, गोवर्द्धनलेख, कीर्तिलेख इत्यादि को शिलालेख कहते हैं। पत्थरों पर या गुफाओं की पथरीली दीवारों पर जब कोई लिखित रचना की जाती है तो इसे शिलालेख कहा जाता है तथा पत्थरों पर लिखने की कला शिलालेखन कहलाती है। शिलालेख शब्द सम्राट अशोक द्वारा पत्थरों तथा चट्टानों पर छोड़े गए लिखित मानव आदर्शों के मिलने के पश्चात प्रचलित हुआ है। सम्राट अशोक के शिलालेख इतिहास की एक स्पष्ट छवि उकेरते हैं तथा एक अहम ऐतिहासिक दस्तावेज माने जाते हैं। ये शिलालेख लंबे समय तक लिखित रचना को सुरक्षित रखने हेतु महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं और इनसे हमें इतिहास के बारे में प्रमाणित व सटीक जानकारियों का ज्ञान प्राप्त होता है। शिलालेख ऐतिहासिक घटनाओं के वे प्रामाणिक साक्ष्य हैं, जिन पर सहजता से विश्वास किया जा सकता हैं।

बीकानेर के प्रमुख शिलालेख

बीकानेर में विभिन्न प्रकार के शिलालेख प्रतिष्ठित है। प्रथम वे शिलालेख हैं जो सती देवलियों पर उत्कीर्ण है। इन देवली लेखों पर दो प्रकार की मूर्तियां उभारी हुई है। देवलियों पर घुड़सवार के आगे या नीचे एक या उससे अधिक स्त्रियों की मूर्तियां उभारी हुई है जो सती हुई थी। मृतक पुरुष को घोड़े पर बैठे तथा सती हुई स्त्री को उसके सामने हाथ जोड़े दिखाया गया है। महाराजाओं के सती स्मारकों में राजा के साथ एक से अधिक पत्नियों, ख्वासों, पातरियों आदि के सती होने के कारण उन सभी की मूर्तियां उभारी हुई है। द्वितीय प्रकार के लेख मन्दिर निर्माण से संबंधित है। जो मंदिरों के गर्भगृह की दीवारों पर लगे है। तृतीय प्रकार के शिलालेख कुओं और तालाबों से संबंधित है। ये लेख 4–5 फीट ऊंचाई के स्तम्भों पर उत्कीर्ण है। इनके चारों ओर सामान्यतया एक ओर गणेश व सांप, दूसरी ओर हनुमान जी, तीसरी ओर सूर्य तथा दक्षिण की ओर देवी जी या करणीजी की मूर्तियां उकेरी हुई है। चतुर्थ प्रकार के संगमरमर के पादुका लेख है। जो साधु सन्यासियों और राजकुल की रानियों के हैं जिन पर युगल चरणों की आकृतियां उत्कीर्ण है। पांचवे प्रकार के लेख देवताओं व इतिहास पुरूषों की संगमरमर की मूर्तियों पर उत्कीर्ण है। छठे प्रकार के स्थंडिल (नाडा) लेख हैं, जो राजकुमारों के अल्पायु में निधन होने पर उनके निमित्त जल व दुग्ध विर्सजन हेतु स्थापित किए जाते थे। बीकानेर के अभिलेख संस्कृत, मिश्रित संस्कृत और राजस्थानी, विशेषकर स्थानीय बीकानेरी मारवाड़ी भाषा में उत्कीर्ण है।

मध्यकालीन राजस्थान में बीकानेर राज्य के 1600 से 1700 ईस्वी तक के विभिन्न प्रमुख शिलालेख इस प्रकार हैं –

गोगली सरदार का शिलालेख, वि.सं. 1647 (11 सितम्बर 1590 ई.)

बीकानेर से करीब 25 किमी दक्षिण में जेगला स्थित है। यहां पर गोगली सरदारों की दो देवलियां हैं। एक देवली विक्रम संवत 1647 आश्विन वदी अष्टमी (11 सितंबर 1590) की है। जो गोगली सरदार 'संसार' से संबंध रखती है।[1] इसके विषय में प्रसिद्ध है कि वह बीकानेर के महाराजा रायसिंह और पृथ्वीराज की सेवा में रहा था और बादशाह के समक्ष एक लड़ाई में सिर कट जाने पर भी उसका धड़ बहुत देर तक लडता रहा था।[2]

सुरसाण की देवली, वि.सं. 1650 (1593 ई.)

बीकानेर से करीब 170 किमी उत्तर में कुछ पूर्व दिशा की तरफ लाखासर बसा हुआ है। हरराज ने अपने पिता के नाम पर इसे बसाया था। राव बीका के चाचा लाखा रणमलोत की देवली के निकट ही हरराज के पौत्र सुरसाण[3] की विक्रम संवत 1650 (1593) की देवली स्थित है।

नाल गांव के शिलालेख

पहला लेख गणेश वन्दना से प्रारम्भ किया हैं। महाराजाधिराज महाराज श्री रायसिंह के शासन काल में वि.सं. 1650 फाल्गुन सुदी एकादशी तिथि (21 फरवरी 1594 ई.) वार गुरूवार को इस कुंए की प्रतिष्ठा हुई। इस कीर्तिस्तम्भ[4] के चारों तरफ, अर्थात् पश्चिम की ओर गणेश, उत्तर की ओर माता, दक्षिण की ओर सूर्य और पूर्व की ओर किसी देवता (शिव) की अस्पष्ट मूर्ति बनी हुई हैं। दूसरे लेख के अनुसार वि.सं. 1659 (29 मार्च 1602 ई.)[5] में वैशाख महीने की कृष्ण पक्ष, द्वितीया तिथि, गुरूवार को अनुराधा नक्षत्र एवं कुंभ योग में रामा के पुत्र ने इस तालाब की प्रतिष्ठा करवाई। तीसरे लेख के अनुसार वि.सं. 1681 वर्ष में माघ महीने की द्वादशी, सोमवार (10 जनवरी 1625 ई.) के दिन महाराजाधिराज महाराजा श्री सूरसिंह के राज्यकाल में सूत्रधार देदा नींबावत[6] ने यहां एक छतरी की प्रतिष्ठा करवाई थी। चौथे लेख के अनुसार वि.सं. की 17वीं सदी में फाल्गुन सुदी पंचमी रविवार के दिन केशव पडिहार[7] ने यहां तालाब बनवाकर उसकी प्रतिष्ठा कराई थी। इस केशव पडिहार का ऐतिहासिक वृत्त ज्ञात नहीं है। पांचवें लेख के अनुसार वि.सं. 1756 एवं शक सं. 1621 में

ज्येष्ठ महीने की शुक्ल पक्ष अष्टमी तिथि (23 मई 1699 ई), शुक्रवार को, पिता–माता श्री सामजी–गारदे के पुत्र श्री महाराज (ठिकानेदार) श्री गोपाल जी के पुत्र श्री इन्द्रभाण[8] जी, बहूजी श्री सांखली जी तथा श्री रूपावत जी ने इस कूप की प्रतिष्ठा करवाई। सूत्रधार राघो लिखमो दरोगा हरजी मुसरफ हैं। कुंए के निर्माण पर 9001 माणक की राशि खर्च हुई है। इस लेख को लिखने वाले लेखक परमेश्वर एवं सूत्रधार रामचन्द्र हैं। ओझाजी के अनुसार यह इन्द्रभाण बाघोड़ा वंश का था।[9]

रायसिंह प्रशस्ति लेख, वि.सं. 1650 (1593 ई.)[10]

बीकानेर नरेश रायसिंह के द्वारा जूनागढ़ के निर्माण के बाद दुर्ग के सूरजप्रोल के स्तंभ में एक प्रशस्ति स्थापित की गई है। इस लेख में दुर्ग के निर्माण की तिथि, राव बीका से लेकर राव रायसिंह तक बीकानेर के शासकों की उपलब्धियों, रायसिंह की विजयों आदि का वर्णन है। इस प्रशस्ति के रचियता जैइता/जैता नामक जैन मुनि (क्षेमरत्न के शिष्य) थे। बीकानेर दुर्ग की इस प्रशस्ति को रायसिंह की प्रशस्ति भी कहते हैं। इस प्रशस्ति से रायसिंह द्वारा मुगलों की सेवा के अन्तर्गत प्राप्त उपलब्धियों पर प्रकाश पड़ता हैं। 60 वीं पंक्ति से रायसिंह के कार्यों का उल्लेख आरंभ होता है। जिनमें काबुल, सिंध और कच्छ पर विजय मुख्य हैं। इस प्रशस्ति में राव रायसिंह की विजय और साहित्य प्रेम, सांस्कृतिक और धार्मिक विषय का वर्णन है। इस प्रशस्ति के अनुसार बीकानेर दुर्ग का निर्माण राव रायसिंह ने अपने मंत्री कर्मचंद द्वारा करवाया था। बीकानेर दुर्ग लाल पत्थरों से निर्मित होने के कारण लालगढ़ भी कहा गया है। इस दुर्ग दूसरा नाम जूनागढ़ भी है। इस प्रशस्ति का समय जूनागढ़ किले के निर्माण के बाद 1594 ई. का है। इस लेख की भाषा संस्कृत हैं।

उदासर का शिलालेख, वि. सं. 1651 (1594 ई.)[11]

वि.सं. 1651 एवं शक सं. 1516 वर्ष में श्रावण महीने की शुक्ल पक्ष, द्वादशी तिथि, शुक्रवार के दिन राठौड़ महाराजाधिराज महाराजा श्री रायसिंह ने अपने भाई रामसिंह की स्मृति में इस तड़ाग की प्रतिष्ठा करवाई।

मानसिंह की छतरी का शिलालेख, वि.सं. 1653 (19 जून 1596 ई.)

बीकानेर से लगभग 25 किमी दक्षिण में जेगला से करीब 5 किमी पूर्व में पारवा स्थित है। यहां पर एक छतरी है, जिस पर बीकानेर के राव जैतसी के पुत्र राठौड़ मानसिंह[12] की मृत्यु और उसके साथ उसकी स्त्री कच्छवाही पूनिमादे के सती होने से संबंधित विक्रम संवत 1653 आषाढ़ सुदी चतुर्थी (19 जून 1596) का लेख खुदा है। छतरी की बनावट साधारण है और उसका छज्जा व गुम्बज बहुत ही जीर्ण–शीर्ण दशा में है।

मरूनायक (मूलनायक) मन्दिर के शिलालेख

पहला लेख कृष्ण वन्दना के श्लोक से शिलालेख का प्रारम्भ किया गया। वि.सं. 1656 (1599 ई.)[13] में मार्गशीर्ष महीने की शुक्ल पक्ष की द्वादशी तिथि रविवार को महाराजाधिराज महाराजा श्री रायसिंह के विजय राज्य में माहेश्वरी गोत्र के राठी प्रसिद्ध मन्त्री श्री जयसिंह के पुत्र मन्त्री कर्ण के पुत्रगण साधुदेदा, खेतसिंह व सांगा द्वारा श्री कृष्ण भगवान के प्रासाद (मन्दिर) का उद्धार (जीर्णोद्धार) करवाया गया है। इस लेख के सूत्रधार वीरदास हैं। दूसरे लेख के अनुसार वि.सं. 1687 एवं शक सं. 1552 (1630 ई)[14] वर्ष में अषाढ़ महीने की द्वादशी तिथि, शुक्रवार को स्वाति नक्षत्र, सिद्ध योग के दिन श्री महाराजाधिराज महाराज श्री सूरसिंह के विजय राज्य में इस प्रासाद (मन्दिर) का उद्धार (जीर्णोद्धार) करवाया गया है।

जांगलू के भाटी जागीरदारों के शिलालेख

जांगलू सांखलों का प्राचीन किला हैं, जो बीकानेर से करीब 30 किमी दक्षिण में स्थित है। चौहान सम्राट पृथ्वीराज की रानी अजादे (अजयदेवी) दहियाणी[15] ने यह स्थान बसाया था। किले के पूर्व में केशोलाय तालाब हैं। इसे दहियों के केशव उपाध्याय नामक ब्राह्मण ने खुदवाया था।[16] तालाब के निकट स्थित वि.सं. 1664 (1607 ई.), वि.सं. 1690 (1633 ई.) व वि.सं. 1696 (1639 ई.) की देवलियां हैं। इन लेखों में जांगलू के भाटी जागीरदारों[17] की मृत्यु का उल्लेख हैं। पंडित ओझा ने इन लेखों को अस्पष्ट बताया था। वर्तमान में ये लेख उपलब्ध नहीं हैं।

किसनाराम व्यास स्मारक लेख, वि.सं. 1661 (1604 ई.)

यह लेख रूधिया हनुमानजी का मन्दिर, जसोलाई[18] पर प्रतिष्ठित हैं। वि.सं. 1661 में पौष महीने की कृष्ण पक्ष की नवमी तिथि, बुधवार को श्री टंकसाली गौत्र

P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-4*(Part-2) December- 2018
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

के श्री जसाजी व्यास (पुत्र श्री किसनाजी) के साथ उनकी परम पतिव्रता पत्नी महासती श्री प्रोहिताणी बाया सती होकर बैकुण्ठ धाम को प्राप्त हुई। इस देवली के सूत्रधार कुंजल खंगार थे।

हनुमानगढ़ का प्रस्तर–खण्ड शिलालेख, (ईस्वी 16वीं सदी)[19]

गंगा राजकीय संग्रहालय, बीकानेर में स्थित ईस्वी 16वीं सदी के इस प्रस्तर–खण्ड पर 'अल्लाह मुहम्मद' खोदकर उभारा गया हैं। यह खण्ड चौकोर चमकीले संगमरमर के बड़े पत्थर का हैं। इसे कलात्मक घड़ाई करके खम्भों युक्त बनाया गया हैं। इस लेख की भाषा फारसी हैं। संग्रहालय की परिरक्षक नीलीमा पूनिया की सद्भाविक अनुमति से मैं इसका छायाचित्र खींच पाया। यह लेख संग्रहालय की दर्शक–दीर्घा में रखा हुआ हैं। लेख को पढ़ने में जोधपुर के मेरे मित्र अबरार अहमद ने मदद की।

भटनेर के शिलालेख

भटनेर के फारसी शिलालेख के अनुसार दुनिया के बादशाह के फैजो करम–मालिक की मेहरबानी से अकबर महान् के जमाने में, उसके नुमाइन्दे के रूप में पर बादशाह से अलग, इकबाल के साथ जो तख्त पर बैठा उस तलवार के धनी खान जहां के मातहत राममनोहर राय ने हिजरी सन् 1017 (1608 ई.)[20] के साल में दुश्मनों पर फतह का प्रतीक यह मनोहर पोल बड़ी शान–शौकत से तामीर करवाया है। आने वाले हाकिमान, जो इसे देखेंगे, वे दिल से दुआ करेंगे और यह ऊंचा बुलन्द दरवाजा हमारी शान को प्रकट करता रहेगा। जो कोई इसकी बुनियाद खराब करेगा उसे सौ तलाक और हजार लानत होवे। दूसरे लेख के अनुसार भटनेर दुर्ग के एक द्वार के पत्थर पर विक्रम संवत 1677 (1620 ई.) खुदा है। प. ओझा[21] के अनुसार इसके नीचे राजा का नाम तथा 6 रानियों की आकृतियां बनी हुई थी, जो अब स्पष्ट नहीं है।

आसकरण का देवली लेख, वि.सं. 1682 (1625 ई.)[22]

बीकानेर से करीब 100 किमी दूर पूर्व में छापर बसा हुआ है। यह मोहिलो की दो प्राचीन राजधानियों में से एक थी। इसकी दूसरी राजधानी द्रोणपुर थी।[23] मोहिल, चौहानों की ही एक शाखा है। जिसके स्वामियों ने राणा का विरुद्ध धारण करके शासन किया था। यहां पर विक्रम संवत 1682 (1625 ई.) का एक देवली स्मारक है, जो गिरधर दास के पुत्र आसकरण[24] का है। इससे ज्यादा जानकारी प. ओझा[25] को भी प्राप्त नहीं हुई थी।

सूरसागर तालाब का कीर्तिस्तम्भ लेख, (तिथि रहित)

बीकानेर नगर के बाहर, पुराने किले के निकट यह तालाब विद्यमान[26] हैं। महाराजा श्री सूरसिंह जी ने सूरसागर तालाब की प्रतिष्ठा करवाई। ओझा[27] ने लिखा कि बीकानेर के सभी तालाबों में से यह सबसे अच्छा माना जाता हैं। इसमें 6 से 7 महीनों तक वर्षा का जल भरा रहता हैं। यह लेख तिथि रहित हैं। यह तालाब महाराजा सूरसिंह ने बनवाया था। उनका राज्यकाल[28] वि.सं. 1670 मार्गशीर्ष सुदि (नवम्बर 1613 ई.) से वि.सं. 1688 आश्विन वदि 30 (15 सितम्बर 1631 ई.) के मध्य रहा था। इसलिए यह कहा जा सकता हैं कि यह तालाब इसी काल के दौरान बनवाया गया होगा।

हर्षोलाव तालाब का स्तम्भ लेख, वि.सं. 1688 (1631 ई.)[29]

गणपति के श्लोक से यह स्तम्भ लेख प्रारम्भ हुआ। आश्विन महीने की पूर्णिमा तिथि, भृगुवार (शुक्रवार) के दिन शटकर्म्म साधक व धर्मज्ञ, पाराशर गौत्र के हर्ष माधव के दिवंगत होने पर, वि.सं. 1688 एवं शक सं. 1553 वर्ष में आश्विन महीने की शुक्ल पक्ष, पूर्णिमा तिथि, भृगुवार (शुक्रवार) के दिन महाराजाधिराज श्री शौर्यसिंह (सूरसिंह) के विजय राज्य में पाराशर गौत्र के हर्ष माधव के सद्चरित्र, निजकुल तिलक, विप्रवर्य्य, शास्त्रवेता व धर्मज्ञ पुत्रों कल्याण, रामचंद्र एवं चतुर्भुज ने हर्ष माधव के नाम पर इस तालाब (हर्षोलाव) की बहुत धन व्यय करके प्रतिष्ठा करवाई।

ससियाणी सागर कूप के शिलालेख, वि.सं. 1695 (1638 ई.)[30]

मोरखाणा बीकानेर से 40 किमी दक्षिण–पूर्व में है। यहां पर सुसाणीदेवी (सुराणों की कुलदेवी)[31] का मंदिर है। गांव के ससियाणी सागर नाम के कुएं के पास स्थित देवली लेख के अनुसार विक्रम संवत 1695 (1638 ई.) की देवली से ज्ञात होता है कि इस गांव का पुराना नाम मोरखियाणा[32] था।

चौहान रठा स्मारक लेख, वि.सं. 1697 (1640 ई.)

यह लेख गोपालजी का मन्दिर, रूघनाथ सागर कुआं, बीकानेर[33] में प्रतिष्ठित हैं। वि.सं. 1606 वर्ष में श्रावण बदि त्रयोदशी, शनिवार को चौहान रठा के पुत्र गोगा के साथ उसकी पत्नी सूदरदे के सती हुई है और उसी दिन सूदरदे ने अपने पति के साथ स्वर्ग में प्रवेश किया। इसके बाद वि.सं. 1697 में ज्येष्ठ बदि नवमी सोमवार को इसके कुल वंशजों ने स्मारक प्रतिष्ठित किया।

महाराजा करणसिंह 'सही' लेख, वि.सं. 1698 (1641 ई.)[34]

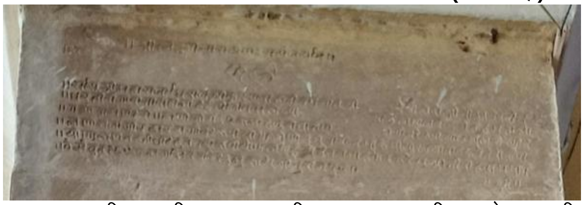

श्री लक्ष्मीनारायण की जय। स्थायी आदेश। श्री महाराजाधिराज श्री करणसिंह जी के खालसे (राजकीय भूमि) श्री बीकानेर की भूमि के सभी गांवों से जिनिस (एक प्रकार का कर) लिया जावें। ब्राह्मण, धातणन गांव, खालसा गांव, जागीरदार के गांव आदि के लिए कर की राशि निश्चित की गई। वि. सं. 1698 में मार्गशीर्ष महीने की कृष्ण पक्ष, त्रयोदशी तिथि को मुकाम श्री बुरहानपुर से ये स्थायी आदेश जारी हुए।

मतीरे की राड़ का लेख, वि.सं. 1699 (1642 ई.)[35]

वि.सं. 1699 वर्ष में कार्तिक महीने की एकादशी, वार रविवार को श्री केसरीसिंह, जो नरों में सिंह था, के खेड़कसी (शहीद) होने पर उसके साथ उसकी बहु श्री समरथदे सती हुई। यह लड़ाई मतीरे की बेल[36] के कारण हुई। बेल बीकानेर के क्षेत्र में उगी और वह फैलकर नागौर (जोधपुर) के क्षेत्र में बढ़ गई। जिससे दो खेतों के मालिकों में मतीरे लेने पर कहा सुनी हुई और यह दो राज्यों की लड़ाई बन गई।

भाटी देवीदास का कीर्तिस्तम्भ, वि.सं. 1700 (1643 ई.)[37]

रामसर (रहासर कूप) स्थित इस लेख के अनुसार वि.सं. 1700 एवं शक सं. 1565 में फाल्गुन महीने की शुक्ल पक्ष, पंचमी तिथि, गुरूवार के दिन महाराजाधिराज महाराजा श्री कर्णसिंह के राज्यकाल में श्री यदुवंश की प्रसिद्ध जाति भाटी वंश को उज्ज्वल करने वाले कान्हड़देव के वंशज दान–भक्ति में निरत देवीदास ने लोक हितार्थ इस रहासर कूप (कुआँ) को प्रतिष्ठित करवाया।

अर्जुन स्मारक लेख, वि.सं. 1704 (1647 ई.)

यह लेख कालीजी मन्दिर के पास, नयाशहर, बीकानेर[38] में प्रतिष्ठित हैं। वि.सं. 1704 वर्ष में चैत्र शुक्ला नवमी (3 अप्रेल, 1647 ई.) तिथि को संता के पुत्र अर्जुन साध ने बीकानेर के मध्य रास्ते में देवलोक गमन किया है।

मदनमोहन मंदिर लेख, वि.सं. 1710 (1653 ई.)[39]

मोहता चौक स्थित इस लेख के अनुसार वि.सं. 1710 में वैशाख महीने की शुक्ल पक्ष, तृतीया, बुधवार (20 अप्रेल, 1653 ई.) के दिन महाराजा श्री कर्णसिंह के राज्य में मेहता कल्याण के पुत्र मेहता जसवत, मेहता रामचंद द्वारा श्री मदन मोहन (भगवान कृष्ण) के मन्दिर का निर्माण कार्य करवाया गया।

छंगाणी हरिकृष्ण स्मारक लेख, वि.सं. 1723 (18 सितम्बर 1666 ई.)

यह लेख चतुराई[40], नाथूसर गेट के बाहर प्रतिष्ठित हैं। वि.सं. 1723 एवं शक सं. 1588 में महामंगलप्रद आश्विन महीने की कृष्ण पक्ष अमावस्या तिथि, मंगलवार (18 सितंबर 1666 ई.) के दिन सूर्योदय की वेला में पुष्करणा जाति छंगाणी हरिकृष्ण के साथ ओझा जदावन की पुत्री हरबाई महासती होकर स्वर्ग मार्ग से बैकुण्ठ धाम को प्राप्त हुई।

आचार्य श्री जैराम स्मारक लेख, वि.सं. 1733 (1676 ई.)

यह लेख बीकानेर में चौखूंटी[41] पर प्रतिष्ठित हैं। वि.सं. 1733 एवं शक सं. 1598 में द्वितीय श्रावण, शुक्ल पक्ष चतुर्थी, गुरूवार (3 अगस्त, 1676 ई.) के दिन आचार्य वेणीदास के पुत्र जैराम के देवलोक को प्राप्त होने पर उनके साथ उनकी पत्नी सती हुई।

जसवंत सागर कुआं लेख, वि.सं. 1740 (1683 ई.)[42]

जसवंत सागर दरवाजा के अन्दर स्थित इस लेख के अनुसार वि.सं. 1740 एवं शक सं. 1605 में वैशाख महीने की शुक्ल पक्ष सप्तमी, सोमवार (23 अप्रेल, 1683 ई) के दिन अमृत वेला में श्री बीकानेर के महाराजाधिराज महाराजा श्री अनूपसिंह के विजय राज्य में माहेश्वरी जाति, राठी वंश के मेहता श्री जसवंत जी के पुत्रगण सर्व श्री अखेराम जी, दयालदास जी, मानसिंह जी, धालचंद जी व जगमणि जी ने 'यशवत सागर' नाम के कुएं का निर्माण करवाया।

अनोपसागर (चौतीना) कूप का कीर्तिस्तम्भ लेख, (तिथि रहित)

पुराने बीकानेर नगर में यह कुआं विद्यमान[43] हैं। महाराजा श्री अनूपसिंह जी ने अनोपसागर कुएं की प्रतिष्ठा करवाई। इस कुएं को चौतीना कुआं भी कहते हैं। ओझा[44] ने लिखा कि बीकानेर के अधिकांश कुओं का जल बड़ा सुस्वादु और पीने के योग्य हैं। लेख तिथि रहित हैं। यह कुआं महाराजा अनूपसिंह ने बनवाया था। उनका राज्यकाल[45] वि.सं. 1726 श्रावण वदि 1 (04 जुलाई 1669 ई.) से वि.सं. 1755 प्रथम ज्येष्ठ सुदि 9 (08 मई 1698 ई.) के मध्य रहा था। इसलिए यह कहा जा सकता हैं कि यह कुआं इसी काल के दौरान बनवाया गया होगा।

आचार्य मुरारदास स्मारक लेख, वि.सं. 1740 (1684 ई.)

यह लेख चौखूंटी, बीकानेर[46] में प्रतिष्ठित हैं। वि. सं. 1740 में चैत्र महीने की कृष्ण पक्ष प्रथमा तिथि, गुरूवार (21 फरवरी, 1684 ई.) के दिन आचार्य शिवराम के पुत्र आचार्य मुरारदास दक्षिण दिशा में कोकण में वीरगति को प्राप्त हुए। उसके बाद वि.सं. 1741 में चैत्र महीने की शुक्ल पक्ष, पंचमी तिथि, मंगलवार (11 मार्च, 1684) को व्यास देवसूरत के पुत्र श्रीराम की पुत्री सामा (श्यामा) औरंगाबाद में अपने पति (मुरारदारस) के साथ सती हुई। इस लेख का सूत्रधार नारायण का पुत्र अखैराज है।

संसोलाव तालाब के शिलालेख

पहले लेख के अनुसार वि.सं. 1723 एवं शक सं. 1588 में महीनों में उत्तम महीनों कार्तिक महीने की कृष्ण

पक्ष 6 मंगलवार (9 अक्टूबर 1666 ई.) के दिन औरंगाबाद में मेहता श्री कल्याण जी के पुत्र मेहता जसवंत[47] जी के देवलोक प्राप्त करने पर, कार्तिक महीने की कृष्ण पक्ष सप्तमी (10 अक्टूबर 1666 ई.) के दिन पतिव्रता मालुंघणी जी इनके साथ सती हुई। इस लेख का सिलावट (सूत्रधार) बीझा था। दूसरे लेख के अनुसार वि.सं. 1737 एवं शक सं. 1602 में माहेश्वरी गनानी राठी वंश के मेहता श्री जगनाथ जी के पुत्र अभयराम जी के पुत्र जयराम[48] जी, अपनी पत्नी वैणी के साथ, माघ महीने की शुक्ल पक्ष, प्रथमा तिथि, सोमवार (10 फरवरी, 1681 ई.) के दिन स्वर्गलोक को प्राप्त हुए। तीसरे लेख के अनुसार वि.सं. 1741 एवं शक सं. 1606 में ज्येष्ठ महीने की कृष्ण पक्ष, द्वितीया तिथि, सोमवार (21 अप्रेल, 1684 ई) को हरोहर बागड़ी के पुत्र सांवलदास के पुत्र रामसिंह बागड़ी[49] के साथ महासती किसन कंवर ने सहगमन कर बैकुंठ–स्वर्ग प्राप्ति की। चौथे लेख के अनुसार वि.सं. 1744 एवं शक सं. 1606 में चैत्र महीने की शुक्ल पक्ष, नवमी तिथि, शनिवार (12 मार्च, 1687 ई.) को श्री गौ ब्राह्मण प्रतिपाल मन्त्रीवर मेहता श्री अखैराजजी के पुत्र मेहता श्री गोकलचंद[50] बैकुण्ठ को प्राप्त हुए। उनके साथ उनकी पत्नी महासती गुणरूपदे जो झंवर जाति के लक्ष्मीदास की पुत्री थी, ने सती होकर बैकुण्ठ की प्राप्ति की। पांचवें लेख के अनुसार वि.सं. 1744 एवं शक सं. 1606 में महीनों में उत्तम महीनो भाद्रपद महीने की कृष्ण पक्ष, द्वितीया तिथि, रविवार (14 अगस्त, 1687 ई.) के दिन भागनगर के भिखुनर गांव में मेहता श्री जसवन्त जी के पुत्र मेहता दयालदास[51] जी देवलोक प्राप्त हुये। इसके बाद भाद्रपद शुक्ल पक्ष, द्वितीया तिथि, सोमवार (29 अगस्त, 1687 ई) को उनकी पत्नी भावती एवं डागा भागचन्द की पुत्री औरंगाबाद में महासती हुई।

पेमराज कोठारी स्मारक लेख, वि.सं. 1749 (1692 ई.)

यह लेख ईदगाह बारी के अन्दर, बीकानेर[52] में प्रतिष्ठित हैं। वि.सं. 1749 एवं शक सं. 1614 में भाद्रपद महीने की शुक्ल पक्ष, चतुर्थी तिथि, रविवार (4 सितम्बर, 1692 ई.) के दिन कोठारी सुखदेव के पुत्र पेमराज के साथ उनकी पत्नी भाण, रिंदेराम पेड़ीवाल की पुत्री महासती हुई। इस लेख का सूत्रधार सिलावट रमचन्द था।

शिवबाड़ी का शिलालेख, वि.सं. 1753 (1696 ई.)[53]

महामंगलप्रद महीनों में उत्तम महीने में शुक्ल पक्ष, वि.सं. 1753 में महाराजाधिराज श्री महाराजा श्री अनूपसिंह जी के विक्रमनगर (बीकानेर) में पुण्य कार्य के निमित्त कीर्तिस्तम्भ प्रतिष्ठित करवाया गया।

डोकवा गाँव का शिलालेख

इसके अनुसार चूहरू जाट ने वि.सं. 1677 (1620 ई.) में चूरू को बसाया[54] था। लेख के अधिकांश अक्षर अस्पष्ट व मिट चुके हैं। यह गांव चूरू व सादुलपुर के बीच राष्ट्रीय राजमार्ग पर स्थित हैं। वर्तमान में राजमार्ग निर्माण कार्यों के चलते यह शिलालेख उपेक्षित अवस्था में पड़ा हैं।

झज्झू गाँव के शिलालेख[55]

कोलायत से लगभग 7 कि.मी. दक्षिण में यह गांव स्थित हैं। यहां पहले पालीवाल ब्राह्मणों की बस्ती थी। इन पालीवालों की वि.सं. 1500 से वि.सं. 1800 तक के देवली–स्मारक यहां पर प्रतिष्ठित हैं।

जैन शिलालेख

श्री ऋषभदेव जी के मन्दिर, नाहटों की गुवाड़, श्री महावीर स्वामी जी के मन्दिर, डागों की गुवाड, श्री अजितनाथ जी के मन्दिर, कोचरों का चौक सहित विभिन्न जैन मन्दिरों में जैन शिलालेख प्रतिष्ठित हैं। इनकी भाषा संस्कृत हैं। प्रमुख लेख इस प्रकार हैं –

श्री अजितनाथ जी की प्रतिमा का लेख (तिथि रहित)[56]

विक्रमनगर के महाराजाधिराज महाराजा श्री रायसिंह जी के विजय राज्य में श्राविका जयमा श्री खरतरगच्छ श्री पंचनदी पति साधिका ने श्री सलेमसाही प्रतिबोधक श्री जिनमाणिक्य सूरी पट्टप्रभाकर युगप्रधान श्री जिनचन्द्र सूरी के शिष्य आचार्य श्री जिनसिंह सूरी श्री राज उपाध्याय पुण्यप्रधान प्रमुख साधु संघ द्वारा पूज्यमान श्री अजितनाथ जी की प्रतिमा प्रतिष्ठित करवायी।

श्री सुपार्श्वनाथ जी की प्रतिमा का लेख (तिथि रहित)[57]

महाराजाधिराज महाराजा श्री रायसिंह जी के राज्य में श्राविका रंगादे ने श्री जिनमाणिक्य सूरी पट्टप्रभाकर युगप्रधान श्री जिनचन्द्र सूरी के शिष्य आचार्य श्री जिनसिंह सूरी श्री राज उपाध्याय पुण्यप्रधान प्रमुख साधु संघ द्वारा पूज्यमान श्री सुपार्श्वनाथ जी की प्रतिमा प्रतिष्ठित करवायी।

श्री शीतलनाथ प्रतिमा लेख, वि.सं. 1662 (1605 ई.)[58]

वि.सं. 1662 वर्ष में चैत्र महीने की कृष्ण पक्ष सप्तमी के दिन श्री पीथाकेन, श्री नेतसी, पासदत्त पोमसी, पहिराज सहित श्री शीतल बिम्ब (प्रतिमा) की प्रतिष्ठा श्री खरतरगच्छ के श्री जिनमाणिक्य सूरी पट्ट युगप्रधान श्री जिनचन्द्र सूरी के द्वारा करवायी गयी।

श्री महावीर स्वामी प्रतिमा लेख, वि.सं. 1662 (1605 ई.)[59]

वि.सं. 1662 वर्ष में चैत्र महीने की कृष्ण पक्ष सप्तमी के दिन मन्त्री अमृत की पत्नी लाछलदे, श्रावक पुत्र भगवानदास सहित श्री महावीर बिम्ब (प्रतिमा) की प्रतिष्ठा श्री खरतरगच्छ के श्री जिनमाणिक्य सूरी पट्ट युगप्रधान श्री जिनचन्द्र सूरी के द्वारा करवायी गयी।

श्री कुंथुनाथ जी प्रतिमा लेख, वि.सं. 1664 (1607 ई.)[60]

वि.सं. 1664 वर्ष में वैशाख शुक्ल पक्ष की सप्तमी तिथि, गुरूवार के दिन राजा श्री रायसिंह के विजय राज्य में श्री विक्रमनगर के श्री ओसवाल जाति बोथरा गौत्र के वणधीर की पत्नी वीरमदे, पुत्र हीरा की पत्नी हीरादे, पुत्र पासा की पत्नी पाटमदे, पुत्र तिलोकसी की पत्नी तारादे, पुत्ररत्न लखमसी की माता रंगादे पुत्र चोला ने परिवार सहित श्री खरतरगछ गच्छाधिराज श्री जिनमाणिक्य सूरी पट्टालंकार युगप्रधान श्री जिनचन्द्र सूरी के द्वारा श्री कुंथुनाथ बिम्ब की प्रतिष्ठा करवायी गयी।

श्री हीरविजयसूरि प्रतिमा लेख, वि.सं. 1664 (1607 ई.)[61]

वि.सं. 1664 वर्ष में वैशाख शुक्ल पक्ष की सप्तमी तिथि, गुरूवार के दिन रत्नसी की पत्नी सुपियारदे ने श्री तपागच्छ श्री विजयसेन सूरी व पंण्डित मेरूविजय के द्वारा बादशाह अकबर द्वारा प्रदत्त जगद्गुरू विरूद्ध धारक भट्टारक श्री हीरविजय सूरी की मूर्ति प्रतिष्ठित करवायी।

P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-4*(Part-2) December- 2018
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

विभिन्न समाज की बगेचियों के शिलालेख[62]

यहां बीकानेर में मूंधड़ों की बगीची में वि.सं. 1655 (1598 ई.) का रुखमण गहलोतणी स्मारक लेख, गंगदासाणी जोशियों की लघु बगेची में वि.सं. 1687 (1630 ई.) का तुलसी जोशी का देवली लेख, रत्ताणी व्यासों की बगेची में वि.सं. 1691 (1634 ई.) का रत्न शर्मा तथा वि.सं. 1710 (1653 ई.) गवरा दादी का स्मारक लेख, लालीमाई जी की बगीची में वि.सं. 1701 (1644 ई.) का महेरदास का स्मारक लेख, डागों की बगीची में वि.सं. 1708 (1651 ई.) का डागा हरगोविन्द व उसकी पत्नी तथा वि.सं. 1718 (1661 ई.) का डागा भीमराज व उनकी पत्नी का स्मारक लेख, लालाणी व्यासों की बगेची में वि.सं. 1713 (1656 ई.) का देवीदास के पुत्र सतीदास का स्मारक लेख, सतियों की बगेची में वि.सं. 1721 (1664 ई.) का नरहर व उसकी पत्नी आनन्दी का लेख, सेवगों की बगीची में वि.सं. 1722 (1665 ई.) का भोजक शेखु व पत्नी जसोदा का स्मारक लेख, अग्रवाल हाण्डी कुण्डी बगेची में वि.सं. 1726 (1669 ई.) का गोविन्द अग्रवाल का स्मारक लेख, दीवान मूंधड़ों की बगेची में वि.सं. 1727 (1670 ई.) का माहेश्वरी मुंधड़ा हरिजी व पत्नी नर्बदा का सती स्मारक लेख सहित बीकानेर की विभिन्न बगेचियों में अलग–अलग सती स्मारक प्रतिष्ठित है। ये लेख तत्कालीन समाज में व्याप्त सती–प्रथा की जानकारी उपलब्ध करवाते हैं।

देवीकुण्ड सागर (राजपरिवार का शमशान स्थल) की छतरियां[63]

बीकानेर से यह 5–6 किमी दूर हैं। इस स्थान पर बीकानेर राज–परिवार का शमशान[64] स्थल है। यहां पर सर्वप्रथम वि.सं. 1630 में महाराजा कल्याणमल का दाह संस्कार हुआ था। इस स्थान पर लगे सूचनापट्ट ''देवीकुण्ड सागर की छतरियाँ'' के अनुसार बीकानेर के शासक राव कल्याणमल (1542 से 1571 ई.) से लेकर पूर्व महाराजा नरेन्द्र सिंह (1946–2003 ई.) तक के राजाओं, रानियों तथा राजपरिवार के सदस्यों की स्मृतिपरक छतरियां दो समूह में निर्मित है। इनमें प्रारंभिक शासकों की छतरियों में ''दुलमेरा का लाल पत्थर'' तथा बाद की छतरियां में ''सफेद संगमरमरी पाषाण'' प्रयुक्त हुआ है। छतरियों में महाराजा अनूप सिंह (1669–98 ई.) की छतरी वास्तुशिल्प एवं तक्षणकला की दृष्टि से उल्लेखनीय है। कुल 16 स्तम्भों पर अवलम्बित इस छतरी में कृष्ण लीला सहित लतापत्रों तथा मयूर आदि पक्षियों का सुंदर तक्षण हुआ है। इन छतरियों का मैंने विस्तार से अध्ययन किया हैं। अधिकांश मूर्तिलेखों की भाषा संस्कृत हैं। कई लेख स्थानीय भाषा राजस्थानी मारवाड़ी में हैं। सन् 1600–1700 ई. की प्रमुख छतरिया[65] इस प्रकार हैं :–

महाराजा रायसिंह की छतरी का मूर्तिलेख, वि.सं. 1668 (22 जनवरी 1612)

वि.सं. 1668 वर्ष में माघ महीने की कृष्ण पक्ष की अमावस्या, बुधवार (22 जनवरी 1612 ई.) को बीकानेर के राठौड़ महाराजाधिराज महाराजा श्री श्री 3 (श्री श्री श्री) रायसिंह के दिवंगत होने पर उनके साथ उनकी तीन धर्मपत्नियां तुंवरी द्रौपदा, सोढी भाणों व भटियाणी अमोलक तथा 3 पातरनें रंगराई, नयणजबा व कामरेखा सती हुई है।

कुमार अर्जुनसिंह की छतरी का मूर्तिलेख, वि.सं. 1688 (17 जनवरी 1632)

वि.सं. 1688 एवं शक सं. 1443 वर्ष में भाद्रपद महीने की कृष्ण पक्ष, सप्तमी तिथि, शुक्रवार (17 जनवरी 1632) के दिन राठौड़ महाराजाधिराज महाराजा श्री श्री 3 शूरसिंह के विजय राज्य में उनके पुत्र महाराज कुमार अर्जुन परमेश्वर के चरणवन्दन में दिवंगत हुये। उनके साथ गंगाजल जैसी निर्मल परम पवित्र पत्नी रानी भटीयाणी श्री पूरबदे (माता–पिता द्वारा दिया नाम यशकुमारी) सती हुई। राजकुमार अर्जुन की पत्नी को ससुराल में नया नाम दिया गया।

भटियाणी महारानी गंगा कंवर का पादुका लेख (तिथि रहित)

महाराजाधिराज श्री सूरसिंह जी की माता श्री गंगा भटियाणी देवलोक को प्राप्त हुई। उनकी स्मृति में यह पादुका प्रतिष्ठित की गई।

P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-4*(Part-2) December- 2018
E: ISSN NO.: 2349-980X Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika

महाराजा सूरसिंह की छतरी का मूर्तिलेख, वि.सं. 1688 (15 सितम्बर 1631)

वि.सं. 1688 एवं शक सं. 1553 वर्ष में आश्विन महीने की कृष्ण पक्ष, अमावस्या तिथि, गुरुवार (15 सितम्बर, 1631 ई.) के दिन राठौड़ श्री विक्रमनगर (बीकानेर) के महाराजाधिराज महाराजा श्री 4 रायसिंह के पुत्र महाराजाधिराज महाराजा श्री श्री 3 सूरसिंह के साथ, उनकी दो पत्नियां विशुद्ध निर्मल मन वाली भटियाणी श्री मनरंगदे (माता पिता द्वारा दिया नाम रतनावती भटियाणी) तथा श्री रानादे (माता पिता द्वारा दिया नाम प्राणमती) के दिवंगत होने पर इस छतरी का निर्माण किया गया। महाराजा सूरसिंह के साथ दो पातरनें रंगरेशा तथा गुणकली भी सती हुई।

मनोहरदास जी की छतरी का मूर्तिलेख, वि.सं. 1691 (1634 ई.)

गणपति के श्लोक से यह स्तम्भ लेख प्रारम्भ हुआ। वि.सं. 1691 एवं शक सं. 1556 में आश्विन महीने की कृष्ण पक्ष, अमावस्या तिथि के शुभवार को राजश्री सिरगजी के पुत्र भगवानदास जी के पुत्र राजश्री मनोहरदास जी के बैकुंठ प्राप्त करने पर, उनके साथ महासती सोनगरी साराजी सती हुई।

सत्रसाल स्मारक लेख, वि.सं. 1695 (1638 ई.)

वि.सं. 1695 एवं शक सं. 1560 वर्ष में प्रथम ज्येष्ठ महीने की शुक्ल पक्ष अष्टमी तिथि, शुक्रवार को पूर्व फाल्गुनी नक्षत्र के दिन बीकानेर के महाराजाधिराज महाराजा श्री सूर्यसिंह जी (सूरसिंह) के पुत्र महाराजकुमार श्री सत्रसाल (छत्रसाल) ने भणी जंगल के युद्ध में देवगति प्राप्त की।

सोनगरा दयालदास स्मारक लेख, वि.सं. 1703 (1646 ई.)

वि.सं. 1703 वर्ष में भाद्रपद शुक्ला अष्टमी (सोमवार, 7 सितम्बर, 1646 ई.) के दिन सोनगरा श्री दयालदास जी के साथ दाडिमदे की पुत्री किसन कुंवरी के सती हुई।

राजश्री करमसेन स्मारक लेख, वि.सं. 1719 (1662 ई.)

वि.सं. 1719 एवं शक सं. 1584 में चैत्र महीने की शुक्ल पक्ष षष्ठी तिथि, शनिवार (15 मार्च, 1662 ई.) को राजश्री मनोहरदास के पुत्र राजश्री करमसेन के बैकुण्ठ प्राप्त होने पर उनके साथ पतिव्रता व पार्वतीरूप पत्नी भटियाणी श्री कोलादेजी के सती हुई। इसके साक्षी सूर्य और चन्द्रमा है।

महासती विचित्र कंवर तथा कुंवर सुरताणसिंह सिसोदिया मूर्तिलेख, वि.सं. 1720 (27 जनवरी 1664)

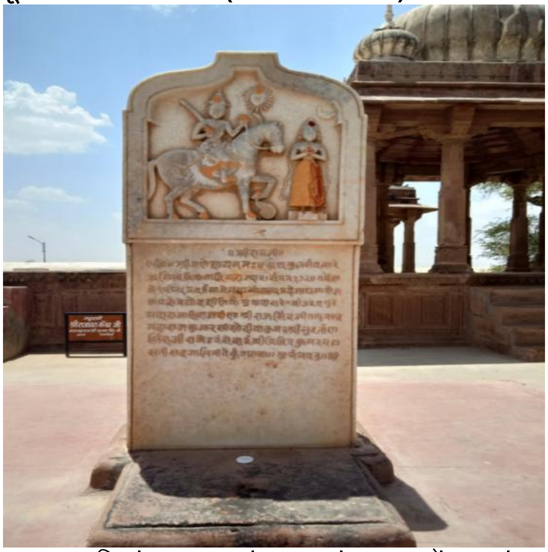

वि.सं. 1720 एवं शक सं. 1585 में महामंगलप्रद माघ महीने की कृष्ण पक्ष, त्रयोदशी तिथि, शुक्रवार (15 जनवरी, 1664 ई.) को श्री उदयपुर के महाराजाधिराज राणाजी श्री राजसिंह जी के पुत्र महाराज कुमार सिसोदिया कुंवर श्री सुरतांणसिंह जी का निधन होने पर राठौड़ वंश की बाईश्री विचित्रकंवर महासती ने बैकुण्ठ गमन किया।

महाराजा करणसिंह की छतरी का मूर्तिलेख, वि.सं. 1726 (22 जून 1669)

वि.सं. 1726 एवं शक सं. 1561 में मंगलप्रद आषाढ़ महीने की शुक्ल पक्ष चतुर्थी तिथि, मंगलवार (22 जून, 1969 ई.) के दिन सूर्योदय के बाद बीकानेर महाराजा कर्णसिंह का स्वर्गवास हुआ तथा उनके साथ 8 पत्नियां, जिनका नाम क्रमशः भटियाणी धनराजोत अजाइबदे, विक्रमपुरी कोडमदे, मल्हणवासव मनसुखदे, सुहागदे शेखावत, तुंवरी साहिबदे, नरूकी प्रतापदे शेखावत, भटियाणी जैसलमेरी सिगारदे व साढ़ी सगुणदे तथा 10 खवासनें, जिनका नाम क्रमशः कमोदकली, रामोती, मेघमाला, किसनाई, गुणमाला, चम्पावती, रूपकली, पेमावती, कुंजकली व मृदंगराई एवं एक सहेली सती हुई।

महाराजा मोहणसिंह स्मारक लेख, वि.सं. 1728 (19 मार्च 1671)

वि.सं. 1728 में चैत्र महीने की कृष्ण पक्ष, सप्तमी तिथि, (मंगलवार, 19 मार्च, 1671 ई.) को महाराजाधिराज श्री कर्णसिंह के पुत्र क्षत्रिय धर्मपरायण महाराज श्री मुहणसिंह के साथ एक धर्मपत्नी व एक भोग्यपत्नी ने

P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-4*(Part-2) December- 2018
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

देवलोक गमन किया। उनकी स्मृति में इस प्रतिमा व छतरी की प्रतिष्ठा की गई।

महाराज पदमसिंह स्मारक लेख, वि.सं. 1739 (14 मार्च 1683)

वि.सं. 1739 में चैत्र महीने की कृष्ण पक्ष, द्वादशी, (बुधवार, 14 मार्च, 1683 ई.) को महाराजाधिराज महाराज श्री कर्णसिंह के पुत्र दानवीर व युद्धवीर महाराज श्री पदमसिंह जी के साथ उनकी एक धर्मपत्नी तथा दो भोग्य पत्नी देवलोक को प्राप्त हुई। उनके सती होने पर यह देवली तथा छतरी प्रतिष्ठापित की गयी।

सबलसिंह स्मारक लेख, वि.सं. 1740 (1683 ई.)

वि.सं. 1740 में आसाढ़ महीने की कृष्ण पक्ष, सप्तमी, बुधवार (6 जून, 1683 ई.) के दिन श्री विक्रमनगर (बीकानेर) के राठौड़ वंश के राजश्री किसनदास जी के पुत्र राजश्री सबलसिंह जी के देवलोक प्राप्त होने पर, उनकी पत्नी सुजाणदे उनके साथ सती हुई।

महाराजा केसरीसिंह की छतरी का मूर्तिलेख, वि.सं. 1741 (13 मार्च 1685)

वि.सं. 1741 में चैत्र महीने की कृष्ण पक्ष, तृतीया, शुक्रवार (13 मार्च, 1685 ई.) को महाराजाधिराज महाराजा श्री कर्णसिंह जी के महावीर व क्षत्रिय धर्मनिष्ठ पुत्र केसरीसिंह वर्मा दो पत्नियों तथा सात भोग पत्नियों के साथ देवलोक को प्राप्त हुयें। उनकी स्मृति में यह देवली प्रतिमा व छतरी सुप्रतिष्ठित की गई।

पातर प्रवीणराय का पादुका लेख, वि.सं. 1745 (09 मार्च 1688)

वि.सं. 1688, फाल्गुन वदी द्वादशी (09 मार्च 1688) को पातर प्रवीणराय जी देवलोक को प्राप्त हुई। उनकी स्मृति में यह पादुका प्रतिष्ठित की गई।

महाराजा अनूपसिंह की छतरी का मूर्तिलेख, वि.सं. 1755 (08 मई 1698)

गणपति की वन्दना से इस लेख को प्रारम्भ किया गया हैं। वि.सं. 1755 एवं शक सं. 1620 में प्रथम ज्येष्ठ महीने की शुक्ल पक्ष की नवमी तिथि, रविवार (8 मई, 1698 ई.) के दिन राठौड़ वंश के श्री कर्णसिंह के पुत्र महाराजाधिराज महाराजा श्री अनूपसिंह के दिवंगत होने पर उनके साथ उनकी दो धर्मपत्नी अतिरंगदे तथा तुंवरजी, चार पातरनें– जैमाला, सरसकली, नारंगी व अनारकलीः तीन खवासनें– रगराई, गुलाबराई व सुधड़ाई तथा सात भोगपत्नी रूपकली, कपूरकली, रूपरेखा, हरिरेखा, गुणजोति, मोतीराई, हरिमाला, कमोदी व डगली एवं नवदासियां सती हुयी।

महारानी राजावत कंवर का पादुका लेख (तिथि रहित)

महाराजाधिराज श्री सुजानसिंह जी की माता राजावत जी कंवर देवलोक को प्राप्त हुई। उनकी स्मृति में यह पादुका प्रतिष्ठित की गई।

महाराजा स्वरूपसिंह का नाडा लेख, वि.सं. 1757 (15 दिसम्बर 1700)

वि.सं. 1757 में मार्गशीर्ष महीने की शुक्ल पक्ष की पूर्णिमा तिथि, (शनिवार, 15 दिसम्बर, 1700 ई.) को महाराजाधिराज महाराज श्री सरूपसिंह जी के निधन पर चौकोर नाडा प्रतिष्ठित किया गया। इनकी मृत्यु अल्पायु में ही हो गई थी।

सुझाव

प्राकृतिक कारणों वर्षा, बाढ़ सहित मानवीय अज्ञानता, लापरवाही और दुर्दशा से हजारों लाखों शिलालेख क्रमशः नष्ट होते जा रहे हैं। इनकी सुरक्षा की ओर किसी का ध्यान नहीं हैं। अब भी अधिक विलंब नहीं हुआ है। पूरे देश में सुदूर अंचलों में ऐसे अनेक शिलालेख हैं, जो अभी भी खोजे नहीं गये, सूचीबद्ध भी नहीं हुए हैं, प्रकाशित भी नहीं है, ऐसे समस्त शिलालेखों को व्यापक एवं योजनाबद्ध तरीके से प्रस्तुत किया जाये। इन शिलालेखों की सूचना निर्धारित प्रारूप के अनुसार, उनके मूल पाठ सहित एकत्रित की जाये। मूल पाठ संपादित कर उनका हिंदी भाषा में अनुवाद किया जाये। कालक्रम के अनुसार शिलालेखों को अनेक भागों में प्रकाशित किया जाये। यदि ऐसा हो सका तो भारतीय इतिहास, संस्कृति, सभ्यता, भाषा तथा संवत पर नवीन प्रकाश पड़ेगा। साथ ही यह इस देश को एवं देश की प्राचीनता को नई दिशा देगा, ऐसा मेरा विश्वास है।

निष्कर्ष

उपरोक्त शोधपरक अध्ययन के बाद निष्कर्षतः यह कहा जा सकता हैं कि शिलालेख मौलिक व आधारभूत स्त्रोतों के रूप में हमारे भूतकाल को समझने के लिए उल्लेखनीय एवं महत्वपूर्ण साक्ष्य हैं। इनसे बीकानेर के गौरवशाली वैभव सहित राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक तथा सांस्कृतिक इतिहास की जानकारी प्राप्त होती हैं। शिलालेखों से राजाज्ञा, जन्म–मृत्यु, विजय–पराजय, यज्ञ, राजवंश की उत्पत्ति, वंशवृक्ष, निर्माणकर्त्ता का नाम, निर्माण व जीर्णोद्धार कार्य, वीर पुरूषों का चरित्र, सती प्रथा, शासकों के मध्य संधि, विभिन्न संवत्, भूमिदान, ग्रामदान, दण्ड, जातियों–शखाओं–गौत्र, रीति–रिवाजों, व्यापार–वाणिज्य, कर, मुद्रा इत्यादि की जानकारियाँ प्राप्त होती हैं। बीकानेर का विशाल मरुस्थलीय भू–भाग शिलालेखों की दृष्टि से बहुत समृद्ध है। परंतु इस क्षेत्र के बहुत कम ही शिलालेख प्रकाशित हो पाए हैं। बीकानेर में हजारों की संख्या में शिलालेख किले, महल, मन्दिर, कीर्तिस्तम्भ, बाग–बगीचे, छत्रियाँ, झरोखे, कुएं, तालाब, सरोवर, झालरे, बावडियाँ सहित यत्र तत्र गाँवों में बिखरे पड़े हैं। जिनको मात्र एक शोधग्रन्थ या शोधपत्र में समाहित नहीं किया जा सकता हैं। फिर भी मैंने अधिकतम शिलालेखों को संक्षिप्त रूप से इस शोधपत्र में समाहित करने का प्रयास किया हैं।

अंत टिप्पणी

1. ओझा, गौरीशंकर हीराचन्द, बीकानेर राज्य का इतिहास (प्रथम खण्ड), प्रकाशक गौ. ही. ओझा, सन् 1940, पृष्ठ 54
2. ओझा, वही
3. ओझा, गौरीशंकर हीराचन्द, बीकानेर राज्य का इतिहास (प्रथम खण्ड), प्रकाशक गौ. ही. ओझा, सन् 1940, पृष्ठ 67
4. ओझा, वही, पृष्ठ 50, शोधपत्रिका, वर्ष 36, अंक 3, साहित्य संस्थान राजस्थान विद्यापीठ उदयपुर, जुलाई–सितम्बर 1985, पृष्ठ 23
5. ओझा, वही, पृष्ठ 50, शोधपत्रिका, वही, पृष्ठ 25
6. ओझा, वही, पृष्ठ 49
7. ओझा, वही, पृष्ठ 49, शोधपत्रिका, वर्ष 36, अंक 3, साहित्य संस्थान राजस्थान विद्यापीठ उदयपुर, जुलाई–सितम्बर 1985, पृष्ठ 23
8. शोधपत्रिका, वही, पृष्ठ 24
9. ओझा, पं. गौरीशंकर हीराचन्द, बीकानेर राज्य का इतिहास, प्रथम भाग, प्रकाशक गौ. ही. ओझा, सन् 1940, पृ. 50
10. जर्नल ऑफ दी एशियाटिक सोसायटी ऑफ बंगाल, न्यू सीरिज–16, 1920 ई., पृष्ठ 279, शर्मा, डॉ. गोपीनाथ, राजस्थान के इतिहास के स्त्रोत, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी जयपुर, 2011, पृष्ठ 172, ओझा, रायबहादुर गौरीशंकर हीराचन्द, बीकानेर राज्य का इतिहास (प्रथम खण्ड), प्रकाशक गौ. ही. ओझा, 1940, पृष्ठ 179, शर्मा, डॉ. गोपीनाथ, राजस्थान का इतिहास, भाग 1, पृष्ठ 130
11. शोधपत्रिका, वर्ष 36, अंक 3, जुलाई–सितम्बर 1985, पृष्ठ 25
12. ओझा, गौरीशंकर हीराचन्द, बीकानेर राज्य का इतिहास (प्रथम खण्ड), प्रकाशक गौ. ही. ओझा, सन् 1940, पृष्ठ 54
13. मेहता चौक, बीकानेर में स्थित मरूनायक मन्दिर के शिलालेख के अध्ययन के आधार पर वर्णन, वैचारिकी, भाग 5, अंक 2, भारतीय विद्या मन्दिर शोध प्रतिष्ठान, बीकानेर, अक्टूबर–दिसम्बर 1989, पृष्ठ 29
14. मेहता चौक, वही, वैचारिकी, वही, पृष्ठ 30
15. ओझा, गौरीशंकर हीराचन्द, बीकानेर राज्य का इतिहास (प्रथम खण्ड), प्रकाशक गौ. ही. ओझा, सन् 1940, पृष्ठ 54
16. ओझा, वही, पृष्ठ 55
17. ओझा, वही, पृष्ठ 55
18. व्यास, राजेन्द्र प्रसाद, बीकानेर के शिलालेख एक ऐतिहासिक अध्ययन, परमानन्द पब्लिकेशन्स बीकानेर, 1990 ई., पृष्ठ 11
19. गंगा राजकीय संग्रहालय, बीकानेर, अभिलेखयुक्त खण्ड क्रमांक 594 के अध्ययन के आधार पर वर्णन
20. मरूभारती, वर्ष 33, अंक 4, जनवरी 1986, पृष्ठ 17
21. ओझा, गौरीशंकर हीराचन्द, बीकानेर राज्य का इतिहास (प्रथम खण्ड), प्रकाशक गौ. ही. ओझा, सन् 1940, पृष्ठ 64
22. ओझा, वही, पृष्ठ 60
23. ओझा, वही, पृष्ठ 59
24. ओझा, वही, पृष्ठ 60
25. ओझा, वही, पृष्ठ 59–60
26. ओझा, वही, पृ. 43
27. ओझा, वही, पृ. 43
28. ओझा, वही, द्वितीय भाग, राजस्थानी ग्रन्थागार, तृतीय संस्करण 2013, पृ. 319
29. व्यास, राजेन्द्र प्रसाद, बीकानेर के शिलालेख एक ऐतिहासिक अध्ययन, परमानन्द पब्लिकेशन्स बीकानेर, 1990 ई., पृष्ठ 15
30. ओझा, गौरीशंकर हीराचन्द, बीकानेर राज्य का इतिहास (प्रथम खण्ड), प्रकाशक गौ. ही. ओझा, सन् 1940, पृष्ठ 58
31. ओझा, वही, पृष्ठ 56
32. ओझा, वही, पृष्ठ 58
33. व्यास, राजेन्द्र प्रसाद, बीकानेर के शिलालेख एक ऐतिहासिक अध्ययन, परमानन्द पब्लिकेशन्स बीकानेर, 1990 ई., पृष्ठ 20
34. जूनागढ़ दुर्ग, बीकानेर में सूरजपोल के स्तंभ पर स्थित रायसिंह प्रशस्ति के ऊपरी भाग (करणसिंह सही लेख) के अध्ययन के आधार पर वर्णन
35. वैचारिकी, भाग 11, अंक 2, भारतीय विद्या मन्दिर शोध प्रतिष्ठान, बीकानेर, अक्टूबर–दिसम्बर 1995, पृ. 33, ओझा, रायबहादुर गौ. ही., बीकानेर राज्य का इतिहास (प्रथम खण्ड), प्रकाशक गौ. ही. ओझा, सन् 1940, पृष्ठ 239–240
36. वैचारिकी, वही, पृ. 33, ओझा, वही, पृष्ठ 239–240
37. शोधपत्रिका, वर्ष 36, अंक 3, साहित्य संस्थान राजस्थान विद्यापीठ उदयपुर, जुलाई–सितम्बर 1985, पृष्ठ 27
38. व्यास, राजेन्द्र प्रसाद, बीकानेर के शिलालेख एक ऐतिहासिक अध्ययन, परमानन्द पब्लिकेशन्स बीकानेर, 1990 ई., पृष्ठ 22
39. मोहता चौक, बीकानेर में स्थित मदनमोहन मन्दिर कांच लेख के अध्ययन के आधार पर वर्णन
40. व्यास, राजेन्द्र प्रसाद, बीकानेर के शिलालेख एक ऐतिहासिक अध्ययन, परमानन्द पब्लिकेशन्स बीकानेर, 1990 ई., पृष्ठ 30
41. व्यास, वही, पृष्ठ 35
42. व्यास, वही, पृष्ठ 38
43. ओझा, पं. गौरीशंकर हीराचन्द, बीकानेर राज्य का इतिहास, प्रथम भाग, प्रकाशक गौ.ही. ओझा, सन् 1940, पृ. 42
44. ओझा, वही, पृ. 42
45. ओझा, वही, द्वितीय भाग, राजस्थानी ग्रन्थागार, तृतीय संस्करण 2013, पृ. 319
46. व्यास, राजेन्द्र प्रसाद, बीकानेर के शिलालेख एक ऐतिहासिक अध्ययन, परमानन्द पब्लिकेशन्स बीकानेर, 1990 ई., पृष्ठ 37
47. व्यास, वही, पृष्ठ 31
48. व्यास, वही, पृष्ठ 36
49. व्यास, वही, पृष्ठ 41
50. व्यास, वही, पृष्ठ 41

51. व्यास, वही, पृष्ठ 42
52. व्यास, वही, पृष्ठ 43
53. वैचारिकी, अंक 3, भाग 10, भारतीय विद्या मन्दिर शोध प्रतिष्ठान, बीकानेर, जनवरी–मार्च 1995, पृष्ठ 32
54. ओझा, रायबहादुर गौ. ही., बीकानेर राज्य का इतिहास (प्रथम खण्ड), प्रकाशक गौ.ही. ओझा, सन् 1940, पृष्ठ 62
55. ओझा, वही, पृष्ठ 52
56. नाहटा, अगरचंद, नाहटा, भंवरलाल, बीकानेर जैन लेख संग्रह, नाहटा ब्रदर्स, कलकत्ता, लेखांक 1400, पृ. 186
57. नाहटा, वही, लेखांक 1401, पृ. 186
58. नाहटा, वही, लेखांक 1406, पृ. 187
59. नाहटा, वही, लेखांक 1407, पृ. 187
60. नाहटा, वही, लेखांक 1531, पृ. 205
61. नाहटा, वही, लेखांक 1552, पृ. 209
62. व्यास, राजेन्द्र प्रसाद, बीकानेर के शिलालेख एक ऐतिहासिक अध्ययन, परमानन्द पब्लिकेशन्स बीकानेर, 1990
63. राजपरिवार की विश्राम–स्थली पर स्थित सूचनापट्ट ''देवीकुण्ड सागर की छतरियाँ'' के अनुसार वर्णन
64. ओझा, रायबहादुर गौ. ही., बीकानेर राज्य का इतिहास (प्रथम खण्ड), प्रकाशक गौ.ही. ओझा, सन् 1940, पृष्ठ 48
65. देवीकुण्ड सागर, बीकानेर में स्थित राज–परिवार की विभिन्न छतरियों के मूर्तिलेखों तथा पादुका लेखों के अध्ययन के आधार पर वर्णन